Dr. Sunil Kr. 'Suman'
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. college Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-IV
Date:- 26-8-20
Do-Next-class

Structuralism

Contribution of Titchener

(5) संवेग (Emotion):- टिचेनर के लिए संवेग से तात्पर्य शरीर के भीतर संवेदन से उत्पन्न होने वाले तीव्र भावों से होता है। इसलिए चेतन अनुभूति का भाव (feeling) ही संवेदन का महत्वपूर्ण सारभाग होता है। टिचेनर ने संवेग के अध्ययन के लिए दो विधियों का प्रतिपादन किया है:- प्रभाव विधि (Method Impression) तथा अभिव्यक्ति की विधि (method of Expression)। जब हमलोग विभिन्न भावात्मक गुणों या विशेषताओं की तुलना करते हैं, तो प्रभाव विधि का उपयोग करते हैं। जैसे विभिन्न रंगों के भावात्मक गुणों या विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए ख्याल से हम उसे सुखद से दुःखद के क्रम में सुव्यवस्थित कर सकते हैं। अभिव्यक्ति में शारीरिक परिवर्तनों जैसे- साँस लेना, रक्तचाप, हृदय गति (heart rate) आदि के आधार पर संवेग का अध्ययन किया जाता है। जब टिचेनर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "टेक्स्टबुक ऑफ साईकोलॉजी" (Textbook of Psychology) 1910 में प्रकाशित किया, तो उसी समय साइकोगैल्वनी त्वक अनुक्रिया (Psychogalvanic skin Reaction or PGR) का मापन भी करना प्रारंभ किया था।

(6) चिन्तन (Thinking):- टिचेनर द्वारा चिन्तन के क्षेत्र में जो कार्य किए गए हैं, वे मूलतः उर्जबर्ग स्कूल द्वारा चिन्तन पर किए गए आलोचना के रूप में है। उर्जबर्ग स्कूल ने अपने शोधों के

आधार पर यह स्पष्ट किया था कि चिन्तन में प्रतिमा (image) नहीं होते हैं। अतः चिन्तन प्रतिमारहित (Imageless) होता है। टिचनर ने इसका विरोध किया और कहा कि चिन्तन में संवेदी एवं प्रतिमा जैसे तत्व पाये जाते हैं। टिचनर के प्रयोज्यों (Subjects) ने अपने चिन्तन प्रक्रिया में प्रतिमारहित अंतर्वस्तु (Imageless content) की संपुष्टि नहीं किया। टिचनर का मत था कि उनके प्रयोज्यों द्वारा किए गए अन्तर्निरीक्षण (introspection) दोषपूर्ण था। उनका मत था कि चिन्तन में जाते संवेदनों एवं प्रतिमाओं का अविश्लेषित मिश्रण (unanalyzed blend) पाया जाता है। टिचनर ने 'इच्छा' (will) तत्व को भी अस्वीकृत कर दिया जबकि वुण्ट ने उसे काफी महत्व दिया था। टिचनर ऐक (Ach) के 'निर्धारक प्रवृत्ति' (determining tendency) को स्वीकार किये हैं तथा उर्जबर्ग स्कूल का यह विचार भी मान्य था कि चिन्तन का स्वरूप अचेतन होता है। चिन्तन प्रक्रिया की व्याख्या में अर्थ के संदर्भ सिद्धांत के महत्व को बताते हुए स्पष्ट किया कि संदर्भ ही वह कारक होता है जो चेतन के संवेदी प्रतिमारूपी अंतर्वस्तु को अर्थपूर्ण बनाता है। परन्तु पुराने एवं आदतीय विचारों के लिए संवेदी तथा प्रतिमा रूपी अंतर्वस्तु बिना चेतन संदर्भ (conscious context) के होते पाये जाते हैं तथा इसका अर्थ अचेतन के रूप में लगाया जाता है। यही कारण है कि उर्जबर्ग मनोवैज्ञानिक द्वारा चिन्तन में चेतन अनुभूति की कमी पायी गयी थी।

(7) मन शरीर समस्या (mind body problem) :- मन शरीर समस्या के सम्बंध में टिचनर ने वुण्ट के मनोभौतिकी समानान्तरवाद को स्वीकार किया। वुण्ट के समान ही उनका मत था कि मन या मानसिक क्रियाएं, शरीर या शारीरिक क्रियाएं से भिन्न होते हैं।

निष्कर्षतः यह है कि टिचनर का संरचनावाद वुण्ट की तुलना में अधिक स्पष्ट एवं सुस्पष्ट रूप से परिभाषित था। इस संरचनावाद की मुख्य विशेषता यह थी कि मनोविज्ञान के क्या (what), कैसे (how), तथा क्यों (why) पहलुओं पर विशेष रूप से बल डालता है। आधुनिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगात्मक उत्साह (experimental rigour) को बढ़ावा दिया है। End.

Scanned with CamScanner